रोक दें तथा स्ट्रप्टोसाइक्लिन 6 ग्राम तथा कापर आक्सीक्लोराइड 200 ग्राम प्रति एकड़ की दर से 200 ली० पानी में घोलकर छिड़काव करें। 10 दिन के अन्तराल पर 2 छिड़काव करें।

शीथ झुलसा रोग :- शीथ झुलसा रोग के नियंत्रण के लिए प्रोपेकोनाजोल 500 मिली० प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।

कीट नियंत्रण :- हरा भूरा एवं सफेद फूदका के नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.6% एस.एल. 50 मिली० 200 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। तना बोधक, पत्ती लपेटक व हिस्पा कीट के नियंत्रण हेतु बाई फेन्थ्रिन 10% ई.सी. 200 मिली०/एकड़ 200 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। गन्धी बग एवं सैनिक कीट के नियंत्रण हेतु मिथाइल पैराथियान 2% धूल 10 किग्रा० प्रति एकड़ बुरकाव करें।

ड्रम सीडर में बुवाई में सावधनियाँ :-

1. बुवाई से पहले ड्रम सीडर की अच्छी तरह से सफाई करें।
2. ड्रम पर बने छेद अच्छी प्रकार खुले हों।
3. प्रत्येक ड्रम में 1.5 किग्रा० तक ही बीज एक बार डालें।
4. बीज का आँखुआ 5 मिली० मीटर से बड़ा न हो।
5. बुवाई के समय खेत में पानी बिल्कुल न हो।
6. खेत में खरपतवार या पूर्व में उगाई गयी फसल के अवशेष सतह पर न हो।
7. लाइन सीधी करने के लिए रस्सी के सहारे ड्रम सीडर को चलायें।
8. ड्रम से बीज गिरने को देखते रहें यदि कोई छेद बन्द हो तो उसे खोल दें।
9. बुवाई के बाद एक सप्ताह तक नमी अवश्य बनी रहे।

ड्रम सीडर से बुवाई के लाभ :-

1. रोपाई के मुकाबले ड्रम सीडर से बोवाई करने पर प्रति एकड़ 2500 रूपये की बचत।
2. नर्सरी डालने का झंझट नहीं।
3. कम समय में अधिक खेत में बोवाई।
4. बीज छिटकवाँ विधि की अपेक्षा कम लगता है।
5. कल्ले ज्यादा बनते हैं तथा उपज अधिक मिलती है।
6. एक आदमी 1 दिन में 3 एकड़ बुवाई आराम से कर लेता है।
7. ड्रम सीडर आदमी द्वारा चलित होने से छोटे किसान आसानी से प्रयोग कर सकते हैं।
8. मशीन सस्ती है। छोटे किसान आसानी से खरीद सकते हैं।
9. लाइन में बुवाई के कारण खरपतवार का नियंत्रण पैडी वीडर से किया जा सकता है।

सौजन्य से-

शोहरतगढ़ एन्वायरन्मेंटल सोसाइटी

-: प्रधान कार्यालय :-

9 प्रेमकुंज, आदर्श कालोनी शोहरतगढ़,

सिद्धार्थनगर - 272205

-: रिजनल शाखा :-

एमएमआईजी 1/28 प्रथम तल, सेक्टर-ए

सीतापुर रोड योजना, लखनऊ- 226021

सहयोगी संस्था :-जमशेद जी टाटा ट्रस्ट, मुम्बई

Ptd. Shanker Offset Printers, S.Nagar, M.-9935282540

ड्रम सीडर से खेती, बचत और अधिक उत्पादन का माध्यम

खरीफ में धान प्रमुख फसल है। किसानों को धान उगाने में बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जिनमें आजकल समय से रोपाई के लिए मजदूर का न मिलना, रोपाई पर अत्यधिक खर्च, मजदूरों द्वारा प्रति वर्ग मीटर मानक के अनुरूप पौधों का न लगाना तथा नर्सरी तैयार करने में लगने वाला समय व खर्च महत्वपूर्ण है। नई तकनीक का प्रयोग कर किसान भाई काफी हद तक इन समस्याओं से निदान पा सकते हैं। साथ ही प्रति एकड़ 2500 रूपया की बचत, रोपाई व नर्सरी तैयार करने का खर्च बचा सकते हैं। ऐसी ही एक तकनीक है धान की ड्रीमसीडर द्वारा बुवाई-

ड्रम सीडर :- यह एक नया यंत्र है जो अंकुरित धान की बुवाई लाइनों में लेवा लगे खेत में जमीन की ऊपरी सतह पर करता है। ड्रम सीडर प्लास्टिक का बना यंत्र है इसका वज़न 18 किग्रा0 होता है। इसमें 4 से 6 तक प्लास्टिक के ड्रम लगे होते हैं। दोनों किनारे पर दो पहिया लगे रहते हैं दोनों पहियों के बीच वाली रॉड पर ड्रम लगे होते हैं। एक हैडिंल लगा होता है, जिसे आदमी खींचकर चलाता है। प्रत्येक ड्रम के दोनों किनारों पर गोल छेद बने होते हैं। जिनकी आपस की दूरी 20 सेमी0 होती है, तथा बीज से